१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

1

आप कैसे निश्चित रह सकते हैं कि आपका धन सुरक्षित है

2

धन के विषय में यीशु ने विस्तारपूर्वक कहा। उसके ३८ दृष्टान्तों में से १६ दृष्टांत धन और सम्पत्ति का प्रबंध कैसे करते हैं इससे संबंधित है। चार सुसमाचार मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना में आश्चर्यजनक रूप से दस पदों में से एक पद या सब में २१९ पद धन और सम्पत्ति पर है। वह हम से नहीं चाहता कि हम इसके विषय में परेशान हों वह चाहता है कि हमारी आवश्यकताओं को प्रदान करने के लिए हम उस पर विश्वास करें।

3

बहुत से लोग धन की समस्याओं के विषय में परेशान रहकर अपना बहुत सा समय व्यय करते हैं किस प्रकार वे उन वस्तुओं के पैसे चुकाए जिन्हें वे चाहते और जिनकी उन्हें आवश्यकता है वे भविष्य के विषय में भी परेशान रहते हैं।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

4 जब वे अवकाश प्राप्त कर लेंगे तो क्या उनके पास जीने के लिए पर्याप्त धन होगा? क्या होगा जब कुछ भी काम करने के लिए वे बहुत बूढे हो जाएंगे या बहुत बीमार हो जाएंगे। लोग स्थिर होने या चिरस्थाई होने की अभिलाषा कर रहे हैं परन्तु वर्तमान और भविष्य के लिए सुरक्षा कहाँ से प्राप्त कर सकते हैं?

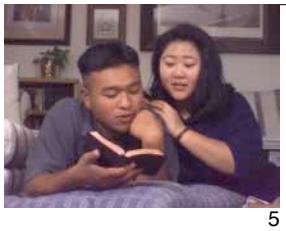

5 परमेश्वर कभी नहीं चाहता कि आपको और मुझे वर्तमान या भविष्य के लिए परेशान होना पड़े। यदि हम उस पर विश्वास करेंगे तो हमें इस विषय में परेशान होने की आवश्यकता नहीं होगी कि हमारे साथ क्या होगा।

6 (मूलपाठः मत्ती ६:३१,३१)
"इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे?

7 क्योंकि तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए।"
मत्ती ६:३१,३२
आइए देखते हैं कि परमेश्वर की हमारे लिए अनन्त सुरक्षित योजना क्या है।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

8

यह सब अदन की वाटिका में आरम्भ हुआ।

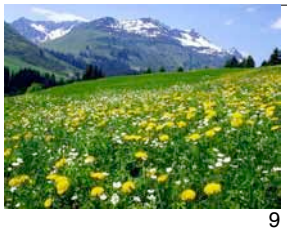

9

सृष्टिकर्त्ता के हाथों से बनाई गई पृथ्वी वास्तव में इतनी सुन्दर थी जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

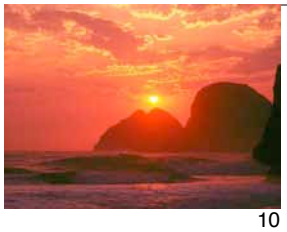

10

परमेश्वर कलाकार के प्रत्येक कार्य ने हर मोड़ पर आखों को लुभाया था। अद्भुत सूर्योदय के बाद मनोहारी सूर्यास्त।

11

शान्त झीलें पहाड़ियों के मध्य स्थिर थीं।

12

प्रत्येक रंग के सुन्दर फूलों और अंगूरों के फूल इंद्रियों को आनन्दित कर रहे थे।

13

वृक्ष प्रत्येक प्रकार के स्वादिष्ट फलों के भार से लटक रहे थे।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

14

गाने वाले पक्षियों ने अपने सुरीले गीतों से वायुमण्डल को भर दिया था। पशु चारागाह में मस्ती से खेल रहे थे और बिना डर के घूम रहे थे। झरने और झीलें सुन्दर रंगीन मछलियों से भरी थीं। एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक कितना सुन्दर स्वर्ग था!

15

आदम और हव्वा ने इस सम्पूर्ण दुनिया का कितना अधिक आनन्द लिया होगा जिसे परमेश्वर ने उनके लिए बनाया था।

16

(मूलपाठः उत्पत्ति २:८)
परन्तु कुछ और भी था!
"यहोवा परमेश्वर ने एक वाटिका लगाई, और वहाँ आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया।" उत्पत्ति :८

17

जरा सोचिए! नई पैदा हुई आश्चर्य और सुन्दरता से भरी दुनिया के बीच कहीं परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए एक वाटिका रूपी घर बनाया।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

18

पृथ्वी पर अत्यधिक सजे घर की तुलना वास्तविक वाटिका रूपी घर से नहीं की जा सकती। परमेश्वर ने न केवल उनको एक प्यारा घर दिया परन्तु उसने उन्हें बहुत अच्छे भोजन के विषय में समझाया जो उसने उन्हें दिया था।

19

(मूलपाठः उत्पत्ति १:२९)

"जितने बीजवाले छोटे - छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं वे सब मैं ने तुम को दिए,

20

और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं वे तुम्हारे भोजन के लिए हैं।"

उत्पत्ति १:२९

21

आदम और हव्वा को किराया नहीं देना पड़ता था। कोई कर देने के लिए परेशान नहीं होना पड़ता था। कोई ताले -चाबी की आवश्यकता नहीं थीं। सुन्दरता को नष्ट करने वाले या चोर नहीं थे। कोई अस्पताल या दवाई की दुकान नहीं थी।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

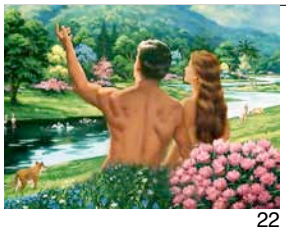

22

उन्होंने पूर्ण स्वास्थ्य और अनन्त जवानी का आनन्द लिया और एक दूसरे के साथ समर्पण का और परमेश्वर के लिए असीमित प्रेम का आनन्द लिया। परमेश्वर चाहता था कि वे ये आशीषें बाटें, इसलिए उसने कहा,

23

(मूलपाठः उत्पत्ति १:२८)

"फूलो फलो और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो ..."

उत्पत्ति १:२८

24

हम परमेश्वर की सम्पत्ति के भण्डारी हैं

25

यह परमेश्वर की योजना थी कि एक बड़ा प्रसन्न स्वस्थ परिवार पृथ्वी पर निवास करे। परमेश्वर यह भी जानता था कि मनुष्य के पास काम करने के लिए काम होना चाहिए जिन्हें वह आनन्द से करे।

26

(मूलपाठः उत्पत्ति १:२८)

और उसने आदम और हव्वा से कहा: "समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, पर अधिकार रखो,

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

27

और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर ...

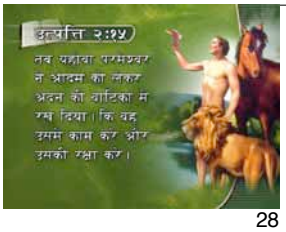

28

(मूलपाठः उत्पत्ति २:१५)

"तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया। कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे।"

उत्पति १:२८ ; २:१५

29

दुनिया की प्रत्येक चीजें परमेश्वर की हैं, फिर भी उसने मनुष्य जाति को पृथ्वी के भण्डारीपन का कार्य सौंपा। परमेश्वर मालिक है, हम भण्डारी हैं, परमेश्वर की सम्पत्ति का प्रबंध कर रहें हैं।

30

(मूलपाठः भजनसंहिता २४:१)

बाइबिल कहती है, "पृथ्वी और जो कुछ उसमें है यहोवा ही का है, जगत और उसमें निवास करने वाले भी।"

भजनसंहिता २४:१

31

(मूलपाठः भजनसंहिता ५०:१०, ११)

फिर से परमेश्वर कहता है,"क्योंकि वन के सारे जीवजन्तु और हजारों पहाड़ों के जानवर मेरे हैं।"

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

32 पहाड़ों के सब पक्षियों को मैं जानता हूँ और मैदान पर चलने फिरने वाले जानवर मेरे हैं।"
भजनसंहिता ५०:११

33 वह परमेश्वर है जो हमें पैसा कमाने का सामर्थ देता है। हम वास्तव में किसी भी चीज के अधिकारी नहीं हैं! हमारे सृष्टिकर्त्ता के रूप में, परमेश्वर हमारी सम्पत्ति और जीवन पर दावा करता है।

34 (मूलपाठः व्यवस्थाविवरण ८:१८)
"परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना, क्योंकि वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्त करने की सामर्थ देता है,

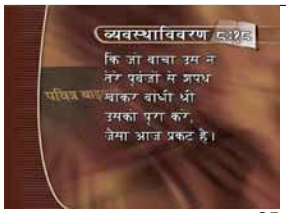

35 कि जो वाचा उस ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बांधी थी उसको पूरा करे, जैसा आज प्रकट है।"
व्यवस्थाविवरण ८:१८

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

36

वेबस्टर की न्यू वर्ल्ड डिक्शनरी भण्डारी शब्द की परिभाषा यह बताती है कि "वह व्यक्ति जो किसी की सम्पत्ति और वित्त संबंधी प्रबंधकर्त्ता के रूप में कार्य करता है।" आज जब एक व्यक्ति भण्डारीपन के परस्पर संपर्क में आता है तो वह जानना चाहता है कि उसका मालिक उससे क्या आशा करता है। यही एक समझौता था जो परमेश्वर ने आदम के साथ किया, क्योंकि बाइबिल कहती है,

37

(मूलपाठः उत्पत्ति २:१६,१७)
"तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है;

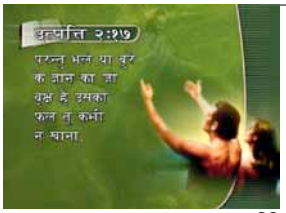

38

परन्तु भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उसका फल तू कभी न खाना,

39

क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"
उत्पत्ति २: १६,१७

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

40

(दृश्य)

परमेश्वर ने मनुष्य के प्रेम और स्वामी भक्ति की परीक्षा ली। आदम और हव्वा वाटिका के सभी दूसरे फल खा सकते थे, परन्तु एक विशेष पेड़ का फल वे नहीं खा सकते थे। परमेश्वर के आज्ञापालन के द्वारा वे उसके स्वामित्व को स्वीकृति दे सकते थे। यदि वे ईमानदार भण्डारी होते और परमेश्वर की स्वामीभक्ति बनाए रखते, तो वे दुनिया में जो स्वर्ग था सदा के लिए रहते! आदम और हव्वा एक साधारण सी परीक्षा में असफल हो गए। वे बेईमान भण्डारी थे, और उन्होंने सब कुछ खो दिया — अपना वाटिका रूपी घर, अमरत्व, प्रेम, प्रसन्नता, सुरक्षा, स्पष्ट और सच्चा विवेक और परमेश्वर के साथ आमने सामने बात -चीत करना और चलना।

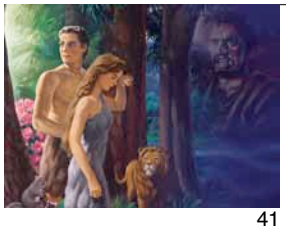
41

वे राजस्व से गुलामी की ओर गिर गए और इन सबके पीछे शैतान सबसे अधिक संतुष्ट हुआ वह उपद्रवी स्वर्गदूत जो पृथ्वी को हमेशा के लिए अपने नियंत्रण में रखने की आशा करता था

42

तब भी शैतान का शासन दुनिया में कुछ सदियों बाद मसीह के आने से टूट गया।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

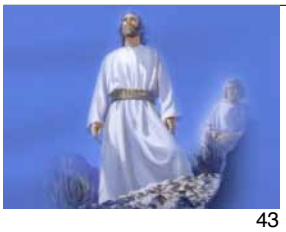

43

शैतान की यह योजना थी कि वह परमेश्वर के स्वर्गीय पुत्र को धोखा दे जिस प्रकार उसने सरलता से आदम और हव्वा को धोखा दिया था। शैतान ने यीशु के चालीस दिन के उपवास तक प्रतीक्षा की।

44

(मूलपाठः मत्ती ४:८,९)

फिर शैतान उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया ...

45

और सारे जगत के राज्य और उसका विभव दिखाकर ...

46

और उसने उससे कहा, कि यदि तू गिरकर मुझे प्रमाण करें तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।"

मत्ती ४:८,९

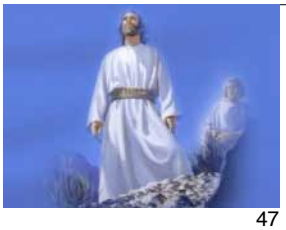

47

शैतान ने यीशु को इस दुनिया के राज्यों से ललचाने की आशा की परन्तु सफल न हुआ। वे वस्तुएं जिन्हें शैतान ने मसीह को देने की बात की थी वे उसकी नहीं थी। उसने एक ग्रह को धोखे और छल से चुराया था और यीशु अपने और पिता के साथ सम्बंध को समस्त दुनिया की सम्पत्ति और चमक के लिए नहीं बेच सकता था।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

48

अन्त में कलवरी पर शैतान के भाग्य पर हमेशा के लिए मुहर लग गई। क्रूस पर मसीह की मृत्यु ने शैतान को हरा दिया! मसीह की मृत्यु ने पृथ्वी को पूर्व अवस्था में लाना सम्भव बना दिया।

49

हम जो कुछ भी हैं और जो कुछ भी हमारे पास है मसीह के अनन्त दान के द्वारा मनुष्य जाति के परिवार को संभव हुआ है। चाहे हम उसे प्रेम करें या ना करे, हमारे जीवन और हमारी सारी सम्पत्तियाँ उसकी सम्पत्ति है।

50

वह केवल हमारा सृष्टिकर्त्ता नहीं है, वह हमारा उद्धारकर्त्ता है !

और आदम और हव्वा की तरह परमेश्वर हमें जो सौपता है उसके हम भण्डारी हैं। तो वह हम से क्या चाहता है?

51

(मूलपाठ : १. कुरिन्थियों ४ : २)

"फिर यहाँ भंडारी में बात देखी जाती है, कि विश्वास योग्य निकले।"

१. कुरिन्थियों ४ : २

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

52

हम परमेश्वर के जीवन के वरदान के भण्डारी हैं। परमेश्वर के सभी वरदानों में से सबसे महत्वपूर्ण वरदान जीवन है। पौलुस प्रेरित यह घोषणा करता है :

53

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १७ : २४, २५)
"परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया ----"

54

सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है।"
प्रेरितों के काम १७ : २४, २५

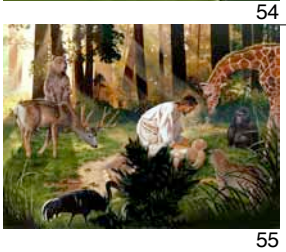
55

हमारा जीवन परमेश्वर से आरम्भ होता है, और वह उसे जीवित रखता है। प्रत्येक धड़कन प्रत्येक श्वास हमारे शरीर की प्रत्येक धमनी का स्पन्दन परमेश्वर से आया हुआ वरदान है।

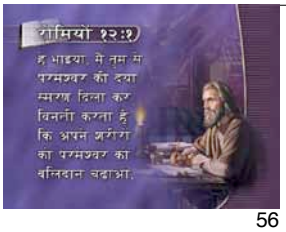

56

(मूलपाठ : रोमियों १२ : १)
पौलुस ने लिखा: "हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को परमेश्वर को बलिदान चढ़ाओ,

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

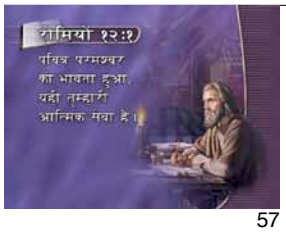

57

पवित्र परमेश्वर को भावता हुआ, यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।" रोमियों १२ : १ एक "शरीर का बलिदान" का अर्थ है स्वतंत्र वाचा या वचनबद्धता अपने जीवन में उसकी अगुवाई ।

58

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १० : ३८)
मसीह "जो भलाई करता फिरा",
प्रेरितों के काम १० : ३८

59

वह हमारे लिए उदाहरण है हमें उसके उदाहरण का अनुसरण करना है निःस्वार्थ सेवा भाव से।

60

हम परमेश्वर के दिए हुए समय के भण्डारी है। हम केवल धन के भण्डारी नहीं हैं, हम अपने समय के भी भण्डारी हैं।
किसी ने कहा है कि समय वह चीज है जिससे जीवन बना हुआ है।
भजनसंहिता के लेखक ने परमेश्वर से अनुरोध किया ,

61

(मूलपाठ : भजनसंहिता ९० : १२)
"हम को अपने दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान हो जाए।"
भजनसंहिता ९० : १२

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

62

(दृश्य)

समय को नष्ट करना जीवन को नष्ट करना है उस वरदान को जिसे परमेश्वर ने स्वयं प्रत्येक पुरुष और स्त्री को दिया है उसका अपव्यय करना है। प्रत्येक व्यक्ति के पास एक दिन में जितने घंटे होते हैं उनकी संख्या एक समान है इन घंटों में जितने मिनट होते हैं उनकी संख्या एक समान है और उन घन्टों में आपने जो कुछ किया है उनका लेखा जोखा होगा।

63

परमेश्वर यह आशा करता है कि हम अपने समय का प्रयोग बुद्धिमानी से करें, वह हमसे यह भी आशा करता है कि हम एक असामान्य समय निकालें -सब्त, सप्ताह का सांतवां दिन जो कि उस पर हमारे विश्वास को व्यक्त करने का साधन है कि वह हमारा सृष्टिकर्त्ता है।

64

जब हमारा सम्पूर्ण समय परमेश्वर का है तो वह कहता है कि सातवां दिन सब्त उसकी संगति में समर्पित कर दे, उसके वचन के अनुसार विश्राम करें और उसकी प्रतिज्ञाओं में से विश्रान्ति लाए। वह हमें खरीदारी और सांसारिक व्यवसाय को दूर करने का निमंत्रण देता है, और कहता है कि हम उसे अपने सृष्टिकर्त्ता और उद्धारकर्त्ता के रूप में स्मरण करें।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

65

हम परमेश्वर के दिये विशेष योग्यताओं के भंडारी है। "अच्छा, आप पूछते हैं" विशेष योग्यता क्या है जिसके लिए हम परमेश्वर के भंडारी होने के जिम्मेदार हैं? मैं नहीं सोचता कि मेरे पास कोई योग्यता है।

66

आज, योग्यता शब्द का अर्थ सामान्य रुप से अच्छा गाने का गुण, कोई यंत्र बजाना, तस्वीर बनाना, कपड़ा सीना लिखना या संगठन करना है।

67

ये निश्चित रुप से योग्यताएं हैं, परन्तु परमेश्वर के मस्तिष्क में जो योग्यता थी वे इनसे सीमित नहीं थीं। परमेश्वर की योग्यताओं के अनुसार, हम प्रत्येक वस्तुओं के लिए जिम्मेदार हैं जो उसने हमें दी हैं जिनमें जीवन, समय, योग्यताएं और अधिकार सम्मिलित हैं। एक दिन परमेश्वर हमसे धनी बनने के लिए कहेगा और हमारी चपलता और अभिलाषा के लिए संतुष्ट होगा या दूसरों को आशीष देने के लिए कहेगा! यीशु ने कहा, "मेरे पीछे हो ले"। वह बिना स्वार्थ के रहता था।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

68

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १० : ३८)

बाइबिल कहती है यीशु ही वह था "जो भलाई करता फिरा ---"

प्रेरितों के काम १० : ३८

69

हमारी योगयता का प्रयोग व्यक्तियों की प्रशंसा प्राप्त करने के लिए नहीं है या परमेश्वर से श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए नहीं हैं। वे हमारे लिए दूसरों को आशीष देने के लिए ऋणी हैं।

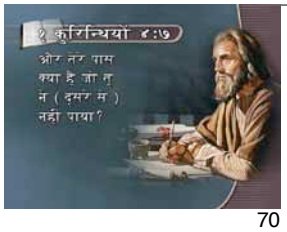

70

(मूलपाठ : १. कुरिन्थियों ४ : ७)

पौलुस ने लिखा है: "और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया?

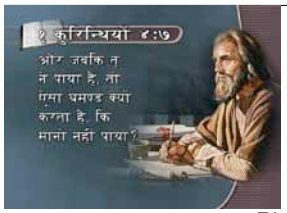

71

और जबकि तू ने पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है, कि मानो नहीं पाया?"

१. कुरिन्थियों ४ : ७

72

हम धन के भण्डारी हैं जो परमेश्वर हमें देता है

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

73

(मूलपाठ : मत्ती ६ : ३३)

जैसे हम "पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो।"

(मत्ती ६ : ३३)

हम यह पाते हैं कि परमेश्वर की आशीषों की हम पर वर्षा हुई है।

74

अपने समय को देने के साथ हम बाइबिल में यह पाते हैं कि परमेश्वर की शारीरिक सुख संबंधी आशीषों के एक भाग को उसे समर्पण सहित लौटाना है।

75

(दृश्य)

एक दिन इब्राहिम का भतीजा लूत और उसका परिवार शत्रु जाति के द्वारा सदोम में अपने घर से बन्दी बना कर ले जाए गए। जब यह समाचार इब्राहिम तक पहुँचा, तब उसने लूत और दूसरे लोगों को छुड़ाने का निश्चिय किया। उसने परमेश्वर से प्रार्थना की वह उसके साथ हो और उसे सफलता दे। परमेश्वर उसके साथ था। लूत और उसका परिवार छुड़ा लिए गए और शत्रुओं का खजाना वापिस लाया गया।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

76

जब इब्राहिम सदोम के समीप पहुँचा, राजा उससे मिलने के लिए बाहर आया, जो खजाना उसने फिर से प्राप्त किया था उसे रखने का आग्रह किया, केवल बंदियों को लौटाने कहा। परन्तु इब्राहिम ने कुछ भी लेने से इन्कार कर दिया। मल्कीसिदक, परमेश्वर का एक याजक था, वह इब्राहिम के लिए भोजन लाया और उसे आशीष दी।

77

(मूलपाठ : उत्पत्ति १४ : २०)
तब अब्राहम ने "---उसको सब का दशमांश दिया।"
उत्पत्ति १४ : २०

78

लूत को छुड़ाने और रक्षा करने में परमेश्वर ने जो सहायता की थी उसकी इब्राहिम प्रशंसा व्यक्त करना चाहता था उसने परमेश्वर का
प्रभुत्व और आशीषें स्वीकार की।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

79

एक सौ पचास साल के बाद इब्राहिम के पोते ने भी उसी प्रकार परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। याकूब जिस समय अपने क्रोधी भाई से भाग रहा था, वह पूर्णरूप से अकेला और भयभीत हो गया था। उसे परमेश्वर की रक्षा की बहुत आवश्यकता थी, परन्तु वह अपने भाई एसाव को लूटने के कारण अत्यधिक अपराध बोध से भर गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे त्याग दिया था और उसे क्षमा नहीं कर सका था।

80

पश्चाताप के अभिप्राय से, याकूब ने परमेश्वर के समक्ष अपनी गलतियों को स्वीकार कर लिया था और तब थकावट से भूमि पर लेट गया और सो गया।

81

(मूलपाठ : उत्पत्ति २८ : १२, २२)

"तब उस ने स्वप्न में क्या देखा, कि एक सीढ़ी पृथ्वी पर खड़ी है, और उसका सिर स्वर्ग तक पहुँचा है;

82

और परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं।"

उत्पत्ति २८ : १२

जब याकूब जागा, तब उसने जाना कि परमेश्वर के मार्गदर्शन करने और रक्षा करने की प्रतिज्ञा थी।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

83

बहुत प्रभावित होकर, उसने कृतज्ञता से प्रतिज्ञा की, "---जो कुछ तू मुझे दे उसका दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूँगा।"

पद २२

84

दाऊद राजा ने भी वही अनुभव किया जब उसने कहा,

85

(मूलपाठ : भजनसंहिता ११६ : १२)

"यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं, उनका बदला मैं उसको क्या दूं?" क्या आप को भी आश्चर्य हुआ है कि आपके लिए उसके अविश्वसनीय अच्छाई के लिए परमेश्वर का धन्यवाद किस प्रकार करें। जीवनदान के लिए, परिवार, स्वास्थ्य शरीर सुख संबंधी आषीशों के लिए? क्या कभी आप यह सोचते हैं कि धन्यवाद पर्याप्त है? बाईबिल के भंडारीपन का सिद्धान्त यहोवा ने हमारे लिए जो उपकार किए हैं उसकी प्रशंसा करने का स्पष्ट रास्ता नियुक्त करता है।

86

याकूब ने कहा वह परमेश्वर को दशमांश या दसवां हिस्सा लौटाएगा, जो भी उसने प्राप्त किया है, जैसाकि उसके दादा, इब्राहिम ने किया।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

87

दशमांश के संबंध में सबसे प्रथम लिखित निर्देश या यहोवा को दसवा हिस्सा लौटाना लैव्यवस्था की पुस्तक में लिखा है।

88

(मूलपाठ : लैव्यवस्था २७ : ३०)

"फिर भूमि की उपज का सारा दशंमाश, चाहे वह भूमि का बीज हो चाहे वृक्ष का फल वह यहोवा ही का है।"

89

वह यहोवा के लिए पवित्र ठहरे।"

लैव्यवस्था २७ : ३०

90

जब हम यहोवा को दशमांश लौटते हैं तो हम निरंतर सच्चाई से प्रभावित हो जाते हैं कि परमेश्वर ही सृष्टिकर्त्ता है और सभी आशीषों का स्त्रोत है और दशमांश का प्रयोग किस प्रकार होता है?

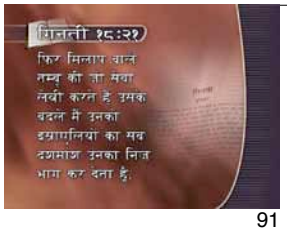

91

(मूलपाठ : गिनती १८ : २१)

गिनती की पुस्तक स्पष्ट उदाहरण देती है: "फिर मिलाप वाले तम्बू की जो सेवा लेवी करते हैं उसके बदले मैं उनको इस्राएलियों का सब दशमांश उनका निज भाग कर देता हूँ,

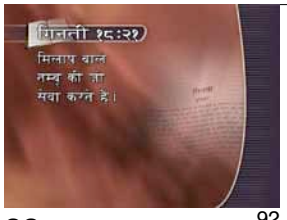

92

मिलाप वाले तम्बू की जो सेवा करते हैं।"

गिनती १८ : २१

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

93

पूरी बाइबिल में हम पाते हैं कि दशमांश ने हमेशा परमेश्वर के कार्य को सहारा दिया।

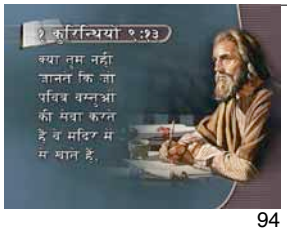

94

(मूलपाठ : १. कुरिन्थियों ९ : १३, १४)

नये नियम में पौलुस समझाता है "क्या तुम नहीं जानते कि जो पवित्र वस्तुओं की सेवा करते हैं वे मंदिर में से खाते हैं,

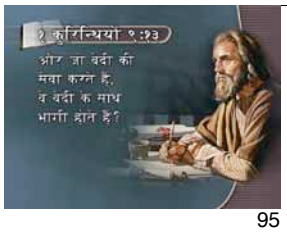

95

और जो वेदी की सेवा करते हैं, वे वेदी के साथ भागी होते हैं?

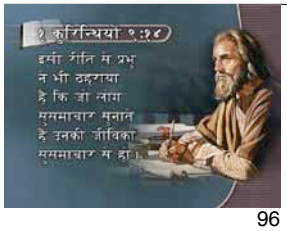

96

इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया है कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं उनकी जीविका सुसमाचार से हो।"

१. कुरिन्थियों ९ : १३, १४

97

जिस समय मसीह ने दशमांश देने के संबंध में आज्ञा दी उसी समय उसने लेखकों और फरीसियों को उनके धर्म के मूल्य के संबंध में उनके संकीर्ण विचारों को झिड़का :

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

98

(मूलपाठ : मत्ती २३ : २३)

"तुम पोदीने और सौंफ और जीरे का दशमांश देते हो परन्तु तुम ने व्यवस्था की गंभीर बातों को छोड़ दिया है :

99

न्याय और दया और विश्वास चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते।"

मत्ती २३ : २३

100

आप सोच रहे होंगे कि आप यहोवा को अपनी आय का दसवां हिस्सा किस प्रकार दे सकने में समर्थ हैं। बहुत से लोगों ने इसके विषय में सोचा परन्तु किसी प्रकार उन लोगों ने परमेश्वर के मार्गदर्शन और बुद्धि पर विश्वास किया और उसे दशमांश लौटाने का निर्णय लिया?

101

कई सप्ताह बाद इन्हीं लोगों ने बड़े उत्साह से साक्षी दी कि उनके जीवन में आश्चर्य हुआ है! किसी न किसी प्रकार, उनकी आय का नौ दसवां अंश, दस -दसवां अंश की अपेक्षा अधिक आय हुई! यहाँ पर वित्त संबंधी सुरक्षा का रहस्य है!

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

102

कुछ लोग कहते हैं, "क्या दशमांश केवल यहूदियों के लिए है? उन लोगों से हम पूछ सकते हैं","क्या स्वर्गीय आशीषें केवल यहूदियों के लिए है?"

103

एक जिम नामक व्यक्ति था जो ईमानदारी से कम वेतन चेक में से निकालकर दशमांश देता था। आरंभ में उसे ऐसा करना कठिन जान पड़ा, परन्तु बाद में उसे अपने व्यवसाय में आशीष मिली और जिसे वित्त संबंधी सुरक्षा में लगा देता है।

104

अपनी वित्त संबंधी सफलता और अति सुखी होने के लिए परमेश्वर के कार्य के लिए पेशगी देने में अब वह परमेश्वर को श्रेय देता है।

105

या एड का ही उदाहरण ले लीजिए जिसने सब्त के दिन अपने व्यवसाय को बन्द रखने के द्वारा विश्वास को प्राप्त किया -केवल सप्ताह के छः दिन अपने व्यवसाय को बढ़ाने के द्वारा इनाम प्राप्त किया! परमेश्वर प्रतिज्ञा रखने वाला है!

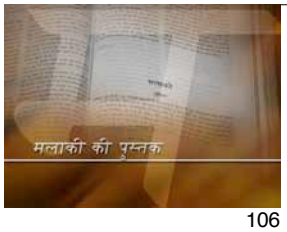

106

ऐसे मसीही मलाकी में दी गई आशीषों के प्रथम अधिकारी ठहरे :

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

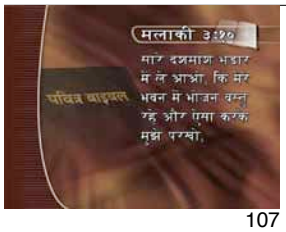

107

(मूलपाठ : मलाकी ३ : १०)

"सारे दशमांश भंडार में ले आओ, कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे और ऐसा करके मुझे परखो,

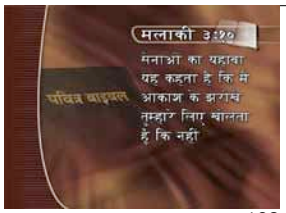

108

सेनाओं का यहोवा यह कहता है कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिए खोलता हूँ कि नहीं

109

और तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूँ कि नहीं।"

मलाकी ३ : १०

110

यहोवा कहता है प्रत्येक वस्तु का दसवां हिस्सा उसके लिए पवित्र है। वह हमें उसे वापिस करने का विशेष अधिकार देता है हमारे भंडारीपन की जांच करने के लिए यह देखने के लिए कि हम उसके प्रभुत्व को आदर देंगे और उसका स्वामित्व स्वीकार करेंगे या नहीं।

111

यदि हम ऐसा करने के लिए इन्कार कर देते हैं तो बाइबिल के अनुसार वास्तव में हम परमेश्वर को लूटते हैं।

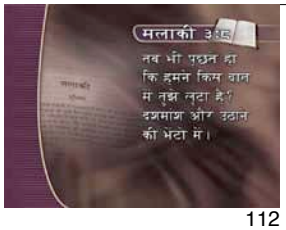

112

(मूलपाठ : मलाकी ३ : ८)

"तब भी पूछते हो कि हमने किस बात में तुझे लूटा है? दशमांश और उठाने की भेंटो में।" मलाकी ३ : ८

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

113

जब दशमांश या हमारी आय का दसवां भाग परमेश्वर का है, तो हम उसे उसके अधिकार के भाग के अतिरिक्त और अधिक देने के लिए आमंत्रित हैं। दान देने के साथ, यह सब हम पर निर्भर करता है कि हम विचार करें कि हमारी दानशीलता कितनी बढ सकती है।

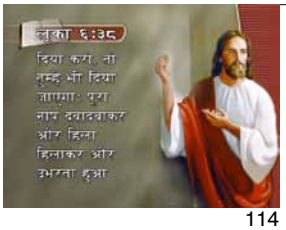

114

(मूलपाठ : लूका ६ : ३८)

जबकि बाइबिल में कुछ सलाह दी हुई हैं। यीशु ने कहा, "दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा: पूरा नाप दबादबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ ----"

लूका ६ : ३८

115

पृथ्वी पर उसके वित्तसंबंधी कार्य की योजना साधारण और सुन्दर है। वह अपने लोगों से कहता है कि वे अपने हृदय से दें, अपने स्वयं की आवश्यकताओं के लिए कभी न डरें जो कि अन्त में उन्हें उनकी आशा से भी अधिक मिलेगा।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

116

आप सोच रहें होंगे कि यदि सब कुछ परमेश्वर का अपना है सोना, चांदी, पशु और भूमि और हम, तो उसे क्यों मेरी सम्पत्ति की आवश्यकता है? दशमांश देने का सिद्धान्त पृथ्वी पर उसके कार्य को आगे बढ़ाने की योजना का हिस्सा है।

117

उसका यह मतलब कभी नहीं था कि लाटरी, बिंगो खेल या चिट्ठी डालकर माल बेचने के द्वारा कलीसिया का वित्त संबंधी कार्य हो!

और क्या दशमांश देना वित्त संबंधी सेवा की एक जिम्मेदारी का रास्ता है।

118

प्रत्येक व्यक्ति जो प्राप्त करता है उसी के अनुसार देता है।

119

यदि आप एक हजार डालर कमाते हैं (या लगभग १००० रुपय कमाते हैं),

120

आप १०० रुपये परमेश्वर को लौटाते हैं।

121

यदि आप एक सौ कमाते हैं,

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

122

आप १० रुपये लौटाते हैं। क्या इससे भी अधिक कुछ और अच्छा हो सकता है?

123

जो कुछ भी हम परमेश्वर को देते हैं वह हमें और अधिक देता है। हम हमेशा जो देते हैं उसकी तुलना में अधिक पाते हैं। जब हम परमेश्वर को दशमांश लौटाते हैं, जो कुछ भी उसने हमारे लिए किया उसकी प्रशंसा हम व्यक्त करते हैं और हम कम अपस्वार्थी और लालची हो जाते हैं।

124

हम दूसरों के लिए अधिक चिंतित हो जाते हैं और जब हम अपनी आशीषें उनके साथ बांटते हैं तब हम प्रेम में और दयालुता में बढ़ने लगते हैं और यीशु की तरह हो जाते हैं। यह मसीह में हमारे बढ़ने के लिए परमेश्वर की योजना है। यीशु ने आश्चर्यजनक कहानियां बताई थीं जो उसकी शिक्षा को दृष्टांत देकर स्पष्ट करती हैं।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

125

यहाँ पर एक अत्यन्त मनोरंजक बात है एक परिश्रमी उद्योगी किसान अत्यधिक परिश्रम करता था और कटनी के समय आश्चर्यजनक रूप से अनाज उत्पन्न हुआ। कटनी बहुत अधिक थी वह उसके खलीहान में जमा न हो सकी। वे पहले से ही फटकर उड़ रहे थे और अनाज अभी पूरा अन्दर नहीं था। वह क्या कर सकता था? यह संकट की स्थिति थी। वह निर्णय लेने में संघर्ष कर रहा था। क्या वह अतिरिक्त अनाज गरीबों को दे दे? परन्तु वह उसका था।

126

क्या वह ऐसा नहीं है जिसने सावधानी से योजना बनाई और अपनी बुद्धि का प्रयोग किया और कृषि संबंधी निपुणता से घाटी में सब से अधिक सफल खेत बनाए? वह अपने आप में निश्चित था कि क्या करना है :

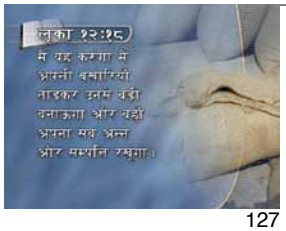

127

(मूलपाठ : लूका १२ : १८ -२१)

"मैं यह करूंगा मैं अपनी बखारियाँ तोड़कर उनसे बड़ी बनाऊंगा और वहाँ अपना सब अन्न और सम्पत्ति रखूंगा।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

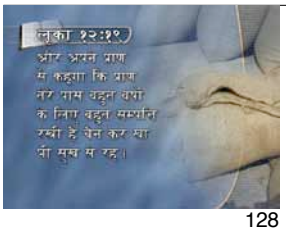

128

"और अपने प्राण से कहूंगा कि प्राण तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत सम्पत्ति रखी है चैन कर खा पी सुख से रह।"

लूका १२ : १८, १९

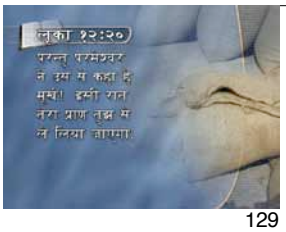

129

"परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा हे मूर्ख! इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा;

130

तब जो कुछ तू ने इकटठा किया है, वह किस का होगा?

131

ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिए धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।"

लूका १२ : २०, २१

132

इस धनवान किसान को यह नहीं ज्ञात हुआ कि उसकी आशीषें कहाँ से आई थीं। उसने अपने सृष्टिकर्त्ता के उपकार को भंडारी की तरह नहीं पहचाना। वह पूर्णरूप से गरीबों को अनाथों को विधवाओं को या बेघर वालों को भूल गया। उसने केवल अपने विषय में ही सोचा। इस व्यक्ति के पास हृदय समस्या थी।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

133

(मूलपाठ : मत्ती ६ : २१)

यीशु ने कहा, "क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहाँ तेरा मन भी लगा रहेगा।"

मत्ती ६ : २१

यीशु सम्पत्ति के प्रति हमारे स्वभाव को लेकर बहुत गंभीर था, क्योंकि यदि हम उन्हें यीशु को समर्पित न करें तो वे हमें परमेश्वर से दूर कर सकते हैं, यहाँ तक कि हमारे अनन्त जीवन को भी नुकसान पहुँच सकता है।

134

(मूलपाठ : मत्ती १६ : २६)

उसने कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा?"

मत्ती १६ : २६

135

आधुनिक मनुष्य के साथ यह समस्या है कि उसका जीवन पेंचीदा हो गया है और उसकी दिनचर्या बहुत व्यस्त हो गई है कि इस कारण वह या तो उद्धारकर्त्ता को भूल गया है या उसके लिए उसके पास समय नहीं है कि उसकी सारी आशीषें कहाँ से आई हैं।

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

136

(दृश्य)

मूल्य को समझने में वह असफल हो गया है जो कि उसके पापों से बचाने के लिए चुकाया गया था और इसका परिणाम यह हुआ कि वह अपने समय, गुण और अपने खजाने से सच्चे परमेश्वर का तिरस्कार करने लगा है। हम सबको प्रतिदिन इसे स्मरण करने की आवश्यकता है –

137

"वे वस्तुएं जिन्हें हम प्रेम करते हैं और जो हमें अच्छी लगती हैं

138

वे उधार पर दी गई हैं; वे पूर्णतः हमारी नहीं हैं।

139

केवल यीशु हमें उन्हें प्रयोग करने के लिए देता है ताकि हमारा जीवन प्रकाशित है

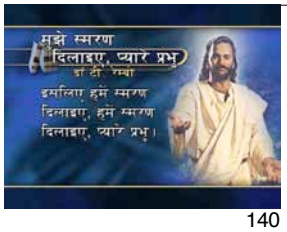

140

इसलिए हमें स्मरण दिलाइए, हमें स्मरण दिलाइए, प्यारे प्रभु।"

- डॉ टी. रेम्बो से लिया गया, "मुझे स्मरण दिलाइए, प्यारे प्रभु।"

१९ - ऐसी पूंजी जिसे आप खो नहीं सकते

141

प्रत्येक वस्तु जो हमारे पास है वह परमेश्वर का वरदान है। हमारा स्वास्थ्य परमेश्वर का वरदान है। प्रत्येक श्वास जो हम लेते हैं परमेश्वर का वरदान है। जो भोजन हम खाते हैं जो कपड़े हम पहनते हैं वह घर जिसमें हम रहते हैं परमेश्वर को लौटाते हैं तो हम कहते हैं, "जो कुछ तूने मुझे दिया है उसके लिए प्रभु तेरा धन्यवाद हो, क्या आप यह कहना पसन्द करेंगे, "प्रभु" मैं तुझे अपने वित्त संबंधी विषय में और अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तुझे प्रथम स्थान देना चाहता हूँ? यदि आप ऐसा करते हैं, आप अपना हाथ ऊपर करेंगे जब हम प्रार्थना करते हैं?